ISBN : 978-93-83813-31-5

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे • डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक

• डॉ. एस. जे. पवार • डॉ. एस. जे. जहागीरदार

BHARATIYA SAHITYA KA ANTARARASHTRIYA PARIPREKSHYA :

ISBN 978-93-83813-31-5

Publisher : Soumya Prakashan
Kabeer Kunj, Mahabaleshawar Colony
Vijayapur – 586 103

© Publisher

First Edition : 2018
Copies : 1000
Pages : xii + 448 = 460
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
सह संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-31-5

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)
प्रथम मुद्रण : 2018

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 448 = 460
मूल्य : **रु. 300/-**
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो
मुद्रक :

त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विट्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

अनुक्रमणिका

1. भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य : विविध आयाम
   • प्रो. ऋषभदेव शर्मा 1

2. कन्नड़ साहित्य का अंतरर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य
   • डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' 8

3. मराठी नाटक की विकास यात्रा
   • प्रो. प्रतिभा मुदलियार 19

4. कोंकणी कहानी साहित्य: नारी एवं वृद्ध विमर्श के सन्दर्भ में
   • प्रो. प्रभा भट् 32

5. भारतीय साहित्य में तेलुगु साहित्य का योगदान
   • डॉ. पठान रहीम खान 42

6. भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य :
   तमिल के विशेष संदर्भ में
   • डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा 50

7. भारतीय साहित्य को गुजराती उपन्यास साहित्य का योगदान
   • डॉ. ए. डी. चावडा 56

9. 20 वीं सदी की प्रमुख कहानियों में आदिवासी समूह का
   सामाजिक संघर्ष
   • प्रो. एस्. के. पवार 65

10. हिंदी दलित साहित्य का प्रेरणास्त्रोत
    • प्रो. कांबले अशोक 72

11. कर्नाटक में हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता
    • डॉ. एस. टी. मेरवाडे 78

कर्नाटक में हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे

लोकतंत्र में पत्रकारिता का विशेष महत्त्व है। मनुष्य अपने आसपास घटित होनेवाली घटनाओं के बारे में सदा जानने को इच्छुक रहता है। उसकी जानने की यह इच्छा वर्तमान समय में विश्व की प्रमुख गतिविधियों तक बढ गई है। जानने की यह उत्कंठा जनसंचार के विविध साधनों से ही पूरी हो पाती है। पत्रकारिता का क्षेत्र काफी व्यापक और विस्तृत होता जा रहा है। पत्रकारिता दैनिक जीवन का ही एक हिस्सा बन गई है। यदि किसी दिन हमें समाचारपत्र उपलब्ध नहीं हों तो उस दिन हमें जीवन में रिक्तता की सी अनुभूति होती है। वस्तुत: पत्रकारिता हमें समाज के विभिन्न वर्गों, समस्याओं तथा विचारों को समझने में सहायता देती है।

हिन्दी पत्रकारिता कर्नाटक में व्यावहारिक रूप में नहीं, अपितु एक न एक संस्था या संगठन के साथ जुडकर पल्लवित हुई है। वास्तव में अन्य प्रांतों की तुलना में कर्नाटक की हिन्दी पत्रकारिता का क्षेत्र अधिक समृध्द नहीं है। कर्नाटक में 1948 के बाद अनेक छोटी बडी हिन्दी पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई हैं। भारतवाणी, हिन्दीवाणी, हिन्दी सुधा इन तीनों पत्रिकाओं का संबंध हिंदी प्रचार संस्थाओं से था और इन पत्रिकाओं के सामने प्रमुख रूप से लक्ष्य थे-

1. संस्था की पत्रिका होने के कारण उस संस्था की मासिक गतिविधियों का परिचय प्रस्तुत करना।
2. प्रांतीय भाषा, साहित्य का हिन्दी के माध्यम से प्रचार प्रसार करना।
3. संस्था द्वारा संचलित परीक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए परीक्षोपयोगी लेख छापना।

'हिंदी सुरभी' केंद्र तथा राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त यह पत्रिका श्री कामाक्षी विद्यावर्धक संघ, अंकोला से सुचारु रूप से प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका के संपादक अध्यक्ष श्री एम. वी. महाले जी हैं और श्री वासुदेव महाले प्रधान संपादक के पद को संभाल रहे हैं। प्रस्तुत पत्रिका मध्यकालीन हिंदी कवियों, प्रयोजनमूलक हिंदी तथा हिंदी साहित्य के अन्य विधाओं पर लिखी गयी आलेखों की जानकारी प्रदान करती है।

भाषा पीयूष

प्रस्तुत त्रैमासिक पत्रिका कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति, जयनगर, बेंगलोर से सन् 1960 से प्रकाशित है स्व श्री. एच. वी. रामचंद्रराव तथा डॉ. वि. रा. देवगिरी जी इस पत्रिका के संपादन की जिम्मेदारी का भार उठाया है। यह पत्रिका हिंदी साहित्य के विविध आयामों के साथ-साथ दक्षिण भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक वैचारिक पत्रिका के रूप में उभर पडी है।

साहित्य सौरभ

मनोहर भारती के संपादकत्व में सन् 1982 में बैंगलोर से इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरु हुआ। अहिंदी भाषी क्षेत्रों के साहित्य इतिहास और संस्कृति को भिन्न भाषा भाषियों के बीच घनिष्ठता बढाना इस पत्रिका उद्दश्य था। साथ ही दक्षिण भारत के अनेक अहिंदी भाषा-भाषियों द्वारा हिंदी में जो कुछ भी लिखा गया-उसे तथा लेखकों को प्रोत्साहित कर उनकी गंध हिंदी द्वारा हिंदी जगत के विशाल प्रांगण में पहुँचाने का कार्य करने का प्रयास हुआ। इस अच्छे उद्देश्य को लेकर शुरू की गई इस पत्रिका का आर्थिक कठनाइयों के कारण दुखद अंत हुआ।

अहिंसा दर्शन

श्रीकंठमूर्ति के संपादकत्व में सन् 1989 में आरंभ हुई यह मासिक पत्रिका थी जो बेंगलोर से प्रकाशित होती थी। अहिंसा का प्रचार करना इसका मूल उद्देश्य था। बौध्द वैदिक, जैन, पारसी, ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों के अहिंसा संबंधी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन इसमें प्रकाशित होता था। सन् 1977 में इसे पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया।

कुंतल भारती

इस वार्षिक पत्रिका का श्रीगणेश सन् 1972 में हुआ। प्रो. सरगु कृष्णमूर्ति के संपादन में यह पत्रिका बेंगलोर से प्रकाशित होती थी। इसमें हिंदी विभाग के आचार्य वर्ग, शोधार्थियों के शोधपरक तुलनात्मक शोध अध्यन संबंधी लेख प्रकाशित होते थे। इस पत्रिका का प्रकाशन आजकल स्थगित है।

बसव मार्ग

बसव समिति बेंगलोर की ओर से 37 वर्षों से यह पत्रिका मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार के सौजन्य से प्रकाशित हो रही है। डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' इसके प्रधान संपादक हैं। यह पत्रिका बारहवीं शाताब्दी के सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन के पुरोधा बसवेश्वर और उनके समकालीन शरणों के जीवन और संदेश के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित है।

कर्नाटक हिंदी सभा पत्रिका

कर्नाटक हिंदी सभा मंड्या द्वारा 2007 से 'कर्नाटक हिंदी सभा पत्रिका' का श्रीगणेश किया गया। आज भी यह पत्रिका सुचारु रूप से कर्नाटक हिंदी सभा, मंड्या द्वारा ही गतिशील है। एस. विनयकुमार जी प्रस्तुत पत्रिका के प्रधान संपादक के साथ साथ स्वयं प्रकाशन कार्य का भार वहन करने में लगे हुए हैं। हिंदी के प्रचार-प्रचार हेतु यह सभा सदैव क्रियाशील रहती है। यह पत्रिका सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक क्षेत्रों से जुडी हुई है। प्रस्तुत पत्रिका त्रिवेणी संगम का प्रतीक बन पडी है। इसमें साहित्य के विविध आयाम अंकुरित हो रहे हैं यह संस्था लगातार संघर्षरत रहकर हिंदी प्रचार में अपना अनुपम योगदान प्रदान कर रही है।

'सृजन' हिंदी कन्नड साहित्य और संस्कृति

वैश्विक स्तर पर भारत की विविधता अत्यंत प्रसिद्ध है। भाषा-बोली, खान-पान, संस्कृति, वेशभूषा, आदि की वैविधता अनूठी है। इसलिए स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कहा था कि भारत देश की एकता उसकी विविधता में छिपी है। भावात्मक एकता स्थपित करने तथा अंतरप्रांतीय संवाद स्थापित करने की दृष्टि से हिंदी को एक सशक्त माध्यम भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

कर्नाटक की प्रांतीय भाषा कन्नड है। गांधीजी की दूर दृष्टि भारत को अंखड रखने की हेतु हिंदी के महत्व को समझा था। दक्षिण को उत्तर से जोडने हेतु हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए सन् 1917 में मद्रास में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार संस्था की नींव रखी गई। दक्षिण भारत में हिंदी भाषा पर्याप्त रूप में प्रचार-प्रसार हो रहा है इसी संदर्भ में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान भी रहा है। इसी उद्देश्य से जनवरी 2013 से कर्नाटक के विजयपुर से सृजन हिंदी कन्नड साहित्य और संस्कृति नामक त्रैमासिक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. एस. टी. मेरवाडे सह संपादक डॉ. एस. जे जहागीरदार हिंदी विभाग के संपादक डॉ. एस. जे पवार, डॉ. शंकर तेरदाल तथा कन्नड विभाग के संपादक प्रो. बी. बी. डेंगनवर तथा डॉ. आर. वी. पाटील आदि का परिश्रम इस पत्रिका के निरंतर प्रसिद्ध का आधार है। इस पत्रिका में हिंदी तथा कन्नड के शोध लेख, कविताएँ, कहानियों के साथ-साथ हिंदी तथा कन्नड साहित्य का निरंतर अनुवाद होता है। इस पत्रिका के पिछले पृष्ठ पर हिंदी तथा कन्नड के प्रसिध्द कवियों की कविताओं का परस्पर अनुवाद इस पत्रिका की विशेषता है। देश के विविध भागों के प्रसिध्द भाषाविद तथा साहित्यकार का परामर्शदाता हैं। कन्नड भाषियों को हिंदी साहित्य से तथा हिंदी भाषियों को कन्नड साहित्य से अवगत करना इस पत्रिका का परम उद्देश्य है। यह पत्रिका केवल साहित्य और संस्कृति के लिए समर्पित है। इसमें कोई विज्ञापन प्रकाशित नहीं किए जाते हैं।

■■

एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर मो. 9448185705